8CHMXV

पाठ 4

पचराही

–लेखक मंडल

जुन्ना जुग म छत्तीसगढ़ ल दक्षिण कोसल के नाव ले जाने जाय । ये बात के प्रमाण जुन्ना पोथी म मिलथे। छत्तीसगढ़ के इतिहास लिखइया मन घलो इही बात ल मानथें। छत्तीसगढ़ के भुइयाँ म जुन्ना सभ्यता अउ संस्कृति के कतको प्रमाण लुकाय हें। आज इतिहासकार अउ पुरातन सभ्यता के जानकार मन अइसन महत्तम के जघा–जमीन ल खनवा–खनवा के प्रमाण मन ल बाहिर निकालत हें। पचराही घलो अइसने प्रमाण वाले जघा आय,जिहाँ के खोदइ म मिले जिनिस मन छत्तीसगढ़ के इतिहास,सभ्यता अउ संस्कृति ल गजब जुन्ना सिद्ध करत हें।

छत्तीसगढ़ के धरती ह कला–संस्कृति बर जगजाहिर हे। इहाँ कतको ठउर म तइहा जुग के मंदिर,किला,महल खड़े हवँय। कतकोन मंदिर मन जस–के–तस हें त कतको ह खँड़हर रूप म।

राजिम, शिवरीनारायण,सिरपुर,मल्हार,ताला,रतनपुर,डीपाडीह,भोरमदेव, घटियारी,बारसूर,दंतेवाड़ा हमर कला–संस्कृति के अगासदिया आँय,जेकर अँजोर दुनिया म बगरत हे। पुरातत्व अउ कला–संस्कृति के नवा ठउर कबीरधाम जिला म 'पचराही' म मिले हे। पुरातत्व जगत म एकर गजब सोर उड़त हे।

पचराही,छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिला मुख्यालय ले भंडार बाजू म लगभग 45 कि.मी. दुरिहा हाँप नँदिया के तीर म मैकल पर्वत के कोरा म बसे हे। पचराही ह नानकुन गाँव आय। सियान मन कहिथें के इहाँ ले पाँच राह माने रस्ता रतनपुर,मंडला,सहसपुर,भोरमदेव (चौरागढ़), अउ लँजिका (लाँजी) बर निकले हें। तेकर सेती एकर नाँव पचराही परे हे। कतको के अइसन घलो कहना हे,के इहाँ कंकाली मंदिर रहिस हे,जेन ह देवी के रूप आय त इहाँ पचरा गीत गाए जाय,तेकर सेती एकर नाव पचराही धराय हे। पचराही के नाव चाहे कोनो अधार म धराय होय, फेर ए ह तइहा जुग म बैपार के बड़ भारी केन्द्र रहिस हे। आज इहाँ के खँड़हर ले मिले तइहा जुग के जिनिस मन अपन कहानी सँऊहें कहत हें।

नगर बसाहट के खँड़हर के संग इहाँ वैष्णव,शाक्त,अउ जैन धरम ले जुड़े देवी–देवता के मूर्ति अउ मंदिर के जानकारी मिले हे, जेकर निर्माण 9वीं ईस्वी ले 13वीं ईस्वी सदी तक के काल म अनुमानित हे। ऐतिहासिक साहित्य म ए क्षेत्र ल पश्चिम–दक्षिण कोसल के नाव ले जाने जात रिहिस। प्रदेश बने के बाद इहाँ कुछ ऐतिहासिक ठउर म खोदइ के काम शुरू होइस। पुरातत्व खोदइ के बुता ल शासन ह महत्व दिस,जेकर ले नवा प्रदेश के पुरातात्विक अउ सांस्कृतिक तिथिक्रम के नवा झलक मिलना शुरू होगे हे।

संचालनालय,संस्कृति एवं पुरातत्व,डहर ले पचराही म बरस 2007 ले खोदइ के काम सरलग चलत हे। खोदइ ले प्रागैतिहासिक काल ले मुगल काल तक के अवशेष मिले हे। पचराही स्थापत्य अउ शिल्प–कला के बहुत बड़े केन्द्र रहिस हे, जउन ल राजनीतिक स्थायित्व अउ धार्मिक समरसता के प्रतीक माने जा सकत हे।

पाछू साल के खोदइ ले दू जलीय प्राणी के जीवाश्म मिले हे, जेमा ले एक जीवाश्म 'मौलुस्का' (घोंघा) परिवार के आय अउ दूसर ह 'पाइला' परिवार के आय। वैज्ञानिक मन के मुताबिक मौलुस्का जीवाश्म के काल लगभग तेरह करोड़ बरस हे। भारत म पहिली बेर खोदइ ले ये जलीय प्राणी के जीवाश्म पचराही म मिले हे। एकर संगे – संग पचराही म आदिमानव के रहवास घलो रहे हे,जिंहा ले उत्तर पाषाण काल अउ मेसोलिथिक काल के बारीक औजार मिले हे। हाँप नँदिया के तीर,गाँव बकेला ले गजब अकन जुन्ना पथरा के औजार मिले हे, जेन ह छत्तीसगढ़ के सबले बड़का जुन्ना पथरा के औजार बनाय के जघा साबित होय हे।

गजब दिन के पाछू सोमवंशी काल म पचराही फेर अबाद होइस। इही बेरा म कंकालिन नाव के ठउर म सुरक्षा के हिसाब ले दू ठन परकोटा घेर के मंदिर के निर्माण करे गिस। इहाँ खोदइ ले ईंटा के बने मंदिर मिले हे। संग म सोमवंशी काल के पार्वती अउ कार्तिक के पट्ट (मूर्ति) घलो मिले हे।

खोदइ के पहिली ये टीला म सोमवंशी काल के दुवार – तोरन अउ कतकोन मूर्ति रखाय रहिस हे,जेन ह अब खैरागढ़ संग्रहालय म रखाय हे।

सोमवंशी काल के पाछू पचराही ह कल्चुरी काल म घलो अबाद रहिस,इहाँ ले पहिली बेर कल्चुरी राजा प्रतापमल्ल देव के सोन के सिक्का (मुद्रा) मिले हे। दू ठन सोन के सिक्का (मुद्रा) रतनदेव के हे। जाजल्लदेव अउ पृथ्वीदेव के घलो चाँदी के सिक्का मिले हें। कल्चुरी काल के पाछू पचराही उपर फणिनागवंशी राजा मन अपन कब्जा जमा लिन अउ ये ठउर म मंदिर अउ महल बनवाइन। इहाँ ले पहिली बेर फणिनागवंशी राजा कन्हरदेव के सोन के सिक्का मिले हे,संगे–संग दूसर अउ फणिनागवंशी राजा जइसे–श्रीधरदेव,जसराजदेव के घलो चाँदी के सिक्का मिले हे। एकर पाछू मुगल काल के समय तक पचराही बड़ महत्तम के बैपारिक ठिहा रहे होही, काबर के इहाँ ले मुगल काल के एक दर्जन सिक्का मिले हे।

पचराही ह 11वीं–12वीं ईस्वी म शिल्प अउ वास्तुकला के बड़ महत्तम वाले सांस्कृतिक केन्द्र अउ बड़ बैपारिक ठउर रहिस हे। मंदिर,मूर्ति के छोंड़े इहाँ आम अउ खास मनखे के बसाहट के अवशेष मिले हे। सुरक्षा दीवार के भीतरी खास मनखे के रहे के ठउर के संग इहाँ ले सोन–चाँदी अउ तामा के सिक्का मिले हे, जबके परकोटा के बाहिर आम नागरिक राहत रहिन होहीं, जिहाँ ले कुम्हार अउ लोहार मन के उपयोग के जिनिस के अवशेष अब्बड़ अकन मिले हे। इँहेच्च ले लइका मन के खेलौना, माटी के माला अउ रोज–रोज बउरे के जिनिस, जइसे लोहा,तामा के औजार अउ गाहना– गूठा मिले हे।

पचराही परिक्षेत्र के **क्रमांक 4 म** पंचायतन शैली के संगे–संग राजपुरुष,उमा–महेश्वर के बड़ सुग्घर मूर्ति मिले हे।

पचराही क्षेत्र **क्रमांक 5 म** तीन परकोटा हे,जउन ह खाल्हे के पखना के उपर लगभग 100 मीटर लंबा, 50 मीटर चाकर ईंटा के बने परदा आय। महल म उपर जाय बर बने सिढ़िया के अवशेष आजो देखब म आत हे।

पचराही म अभी तक 6 ठन मंदिर के अवशेष मिले हे,जिहाँ ले सुग्घर– सुग्घर कलात्मक मूर्ति मिलत हें।

बकेला– हाँप नँदिया के ओ पार बकेला गाँव के टीला म जैन मूर्ति के शिल्प–खंड देखे जा सकत हे, जेमा धर्मनाथ,शांतिनाथ अउ पार्श्वनाथ के खंडित मूर्ति माढ़े हे। तीरेच म बावा डोंगरी नाव के ठउर म जैन मंदिर के दुवार साखा रखाय हे,जेखर मँझोत म महावीर स्वामी के मूर्ति हे।

पचराही हमर छत्तीसगढ़ के पुरातत्व के गौरव आय। आज एकर सोर दुनिया भर म उड़त हे। सरलग खोदइ ले अउ कतको जुन्ना जिनिस मिलही,अइसे लगथे।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

जगजाहिर	=	विश्वप्रसिद्ध	तइहाजुग	=	प्राचीनकाल
खँड़हर	=	खंडहर	अगासदिया	=	आकाश दीप
बरगत हे	=	फैल रहा है	पुरातत्व	=	प्राचीन अवशेष
भंडार	=	उत्तर दिशा	कोरा	=	गोद
साक्त	=	शक्ति के उपासक	वैष्णव	=	विष्णु उपासक
ठउर	=	स्थान,ठिकाना	स्थापत्य	=	भवन निर्माण की कला

शिल्पकला	=	मूर्ति बनाने की कला	स्थायित्व	=	ठहराव
समरसता	=	समानता,समभाव	जीवाश्म	=	हजारों वर्षों से मिट्टी में दबे प्राणियों अथवा वनस्पतियों के अंश
मुताबिक	=	अनुसार			
मौलुस्का	=	घोंघा की प्रजाति			
परकोटा	=	चहारदीवारी	पाइला	=	सीप
पट्ट	=	पत्थर पर	वैपारिक	=	व्यापारिक
आम	=	सामान्य जन	महत्तम	=	महत्व
पंचायतन	=	मंदिर निर्माण की एक शैली	ठिहा	=	केन्द्र,नियत स्थान
			खास	=	विशिष्ट
मंडप	=	मंदिर का अग्र भाग	कलात्मक	=	कला से परिपूर्ण
मँझोत	=	मध्य,केंद्र			

अभ्यास

पाठ से

1. पचराही के नाँव परे के कारण बतावव।
2. पचराही म मिले अवशेष मन के संबंध कोन–कोन धरम ले हे?
3. पचराही म मिले जीवाश्म के बारे में बतावव।
4. कोन–कोन ठउर ल छत्तीसगढ़ के कला–संस्कृति के अगासदिया केहे गे हे?
5. पचराही के खोदई ले मिले जिनिस मन के सूची बनावव।

पाठ से आगे

8D6F26

1. पचराही तीर भोरमदेव मंदिर हे ओकर ऊपर एक नानकुन निबंध लिखव।
2. छत्तीसगढ़ में पुरातात्विक स्थान मन के सूची बनावव अउ गुरूजी से ओकर बारे में चर्चा करव।
3. जुन्ना जिनिस मन ले हमन का बात के पता लगा सकथन? ये जिनिस मन ले हमन अपन ग्यान ल कइसे बढ़ा सकबो एला बिचार के लिखव।

भाषा से

1. खाल्हे म लिखाए सब्द मन ल पढ़व अउ ऊँखर हिन्दी समानार्थी सब्द बतावव–नानकुन, पहिली, पाछू, उपर, सरलग।

2. ए सब्द मन ल पढ़व बैपारिक–केन्द्र, नवा–परदेस, गजब–दिन, चाकर–ईंटा, जुन्ना–जिनिस।

   उप्पर लिखाए सब्द मन जोड़ी अस दिखत हें, मने ओमन दू सबद ले बने हे। एक सब्द एमा दूसर सब्द के बिसेसता ल बतावत हे। अइसन सब्द मन जेन दूसर सब्द के बिसेसता बताथें बिसेसन (विशेषण) कहे जाथे। छत्तीसगढ़ी के अइसने सब्द मन ल खोज के (10 सब्द) लिखव।

8CHIZI

3. पचराही ह कबीरधाम जिला के **भंडार** म हे

   छत्तीसगढ़ म लोहा अउ कोइला के **भंडार** हे।

   उप्पर लिखाय वाक्य म भंडार सब्द दुनो वाक्य म हे फेर ओकर मतलब दुनो म अलग–अलग हे। पहिली भंडार के मतलब हे **दिशा**, अउ दूसर भंडार के मतलब हवय **खजाना**। छत्तीसगढ़ी अउ हिन्दी के अइसने सब्द ल खोज के लिखव।

योग्यता विस्तार

1. अपन तीर–तखार के जुन्ना अउ ऐतिहासिक महत्व के कोनो जघा के जानकारी पता करके ओकर बारे म लिखव।

2. पाठ म आए ए सब्द मन के बारे में इतिहास पढ़इया मन ले पूछ के एकर बिबरन लिखव–
   - दुवार साखा (द्वार–शाखा)
   - दुवार –तोरन
   - पंचायतन शैली

8DFB3T

3. छत्तीसगढ़ म पचराही जइसनेच एक ठउर म नवा खोदई होहे। जेन ह नँदिया के बीचो बीच टापू असन जगहा में हावे, ओकर नाँव पता करके बरनन करव।